200th Birth Anniversary of Maharshi Dayanand Saraswati

Maharshi Dayanand Saraswati, was born on Falgun Krishna Dashami Vikrami Samvat 1981 (February 12, 1824) in Tankara village, Maurvi district of present Gujarat. His father's name was Karsan Ji Tiwari and mother name was Amritbai. His birth name was Moolshankar. While fasting on Shivratri and witnessing rituals in the Shiva temple, the curious child Moolshankar attained enlightenment and left his home at the age of 19 years to attain the darshan of the devout God and set out on a journey of purity.

He went to Mathura and got the education of grammar, vedas and scriptures from Guru Virjanand Dandi and learned from his philosophy that the main reason for the dilemma in the present condition of the country is the prevalence of wrong meanings instead of the correct meanings of the Vedas.

During his journey, he saw the web of religious pomp, superstition and social evils spread in the society and understood why we are slaves of others in our own country. Seeing the country's poverty, illiteracy, plight of women, destruction of language and culture, Dayanand Saraswati became extremely moved. He learned that when India had the knowledge of Vedas, India was the world leader. He pledged to re-establish the Vedas, Vedic religion and ancient culture in India by offering his entire life as Gurudakshina to Guru Virjanand.

He expressed his views on religious, social and political issues through his classic book 'Satyarth Prakash'. For the first time, he created awareness in the context of cow protection, Hindi protection, usefulness of Sanskrit language, Swadeshi, self-language and self-respect.

He established Arya Samaj in Mumbai in the year 1875 to keep his goals continuously moving forward. In order to restore India to the position of world leader, on Vedas, he presented its actual commentary before the countrymen and talked about the right of everyone to read the Vedas and to act in life as per the Vedic principles. In his short but precious life, he fiercely attacked religious superstitions and social evils. Proclaiming the message of the Vedas as 'Mata Prakarana Bhavati', he became the biggest advocate of women's education. He called for bringing a large section of the Hindu society, which had been isolated due to casteism, untouchability and discrimination, into the mainstream of society, raising their standard of living and working for education.

While propagating the cause of social upliftment, Swadeshi and patriotism, he became a thorn in the eyes of British. At the age of 59, he was poisoned and eventually he passed away in Ajmer on the eve of diwali on 30 Oct 1883.

The actions undertaken by Maharshi Dayanand Saraswati during his lifetime, played a key role in restoring India to the position of world leader. Today the evil practices of casteism, untouchability, child marriage, polygamy, Sati practice, animal sacrifice, male sacrifice, purdah system, Devdasi have come down substantially. The works like inter-caste marriage, Dalit empowerment, widow remarriage, education campaign for all, women empowerment, right to education for women, right to read Vedas for all, education through Gurukul education system are being done by the government by making laws.

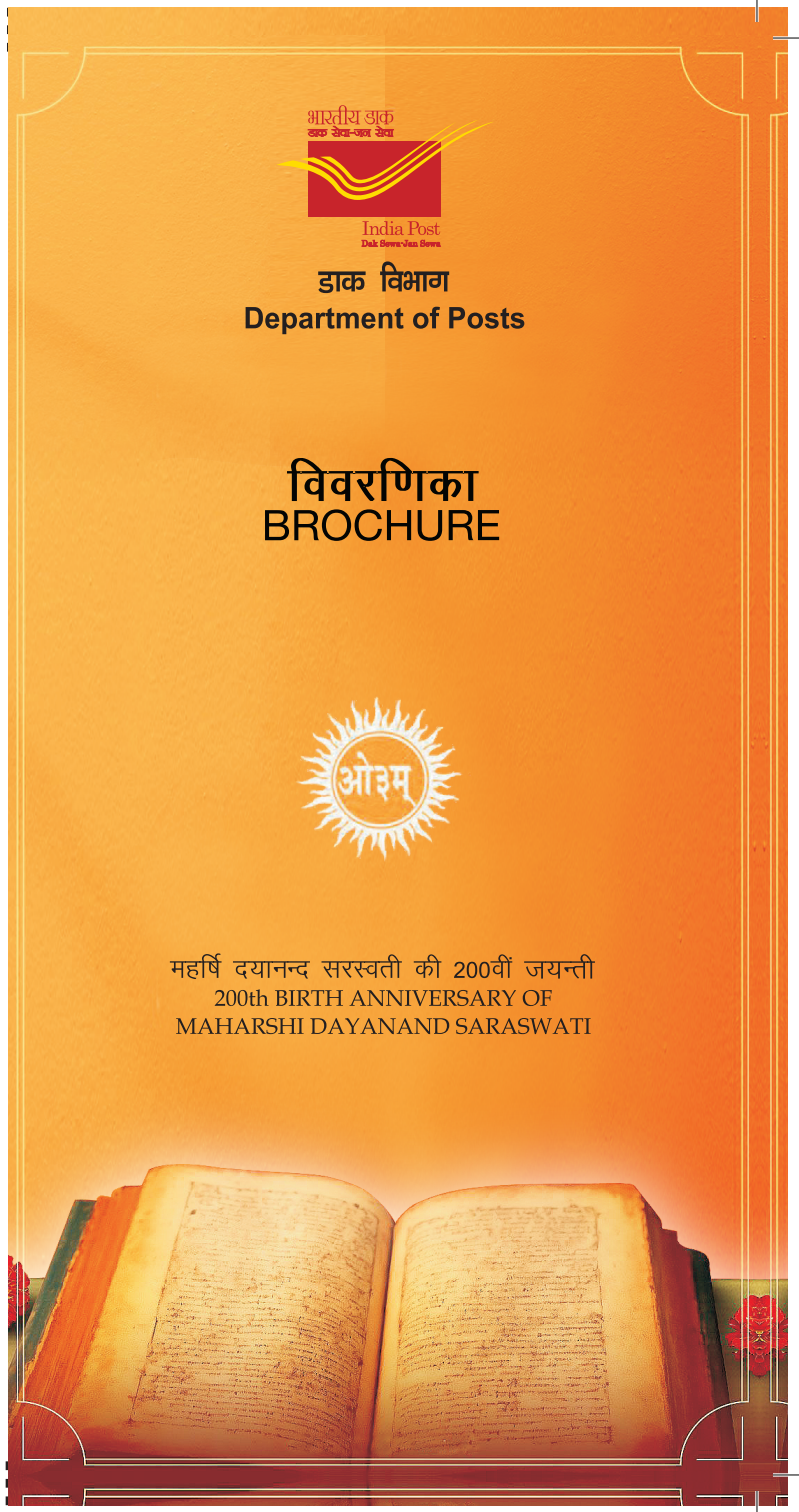
His thoughts are eternal and relevant even today. Even after 200 years of his birth, the life of Maharshi Dayanand Saraswati gives us new vision and consciousness, the light of truth given by him gives us new energy and life giving power to fulfill our resolve every day.

The Logo on 200th birth anniversary of Maharshi Dayanand Saraswati, which was unveiled by Prime Minister Shri Narendra Modi on the occasion of the beginning of its 200th year on February 12, 2023, is a symbol of human sacrifice, unbroken peace, happy world and a unified India. It also symbolises that Vedas forms the basis of life of human race.

The Department of Posts is proud to release commemorative postage stamp on "200th Birth Anniversary of Maharshi Dayanand Saraswati" and celebrates the life and work of a patriot who spread the light of Vedic knowledge and gave a new direction to humanity.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Shri Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by Proponent



महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण दशमी विक्रमी सम्वत् 1981 (12 फरवरी, 1824) को वर्तमान गुजरात राज्य के मौरवी जिले के टंकारा गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम करसन जी तिवारी और माता का नाम अमृतबाई था। बचपन में वे मूलशंकर के नाम से जाने जाते थे। एक बार शिवरात्रि के उपवास के दौरान शिव मन्दिर में जागरण करते हुए जिज्ञासु बालक मूलशंकर को बोध प्राप्त हुआ। तत्पश्चात, ईश्वर को जानने एवं प्राप्त करने के उद्देश्य से उन्होंने 19 वर्ष की आयु में गृहत्याग कर दिया और ज्ञान की खोज में निकल पड़े।

तत्पश्चात, मथुरा जाकर उन्होंने गुरु विरजानन्द दण्डी जी से व्याकरण, वेद एवं शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त की तथा गुरु विरजानन्द के दर्शन से उन्होंने यह जाना कि देश की वर्तमान दुदर्शा का मूल कारण वेद के सही अर्थों के स्थान पर गलत अर्थों का प्रचलित हो जाना है।

उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान समाज में फैले धार्मिक आडम्बर, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के जाल को बड़ी नजदीकी से देखा और इस बात को समझने का प्रयास किया कि आखिर हम अपने ही देश में दूसरों के गुलाम क्यों हैं? देश में व्याप्त गरीबी, अशिक्षा, महिलाओं की दुर्दशा, भाषा और संस्कृति का ह्रास देखकर दयानन्द सरस्वती अत्यन्त द्रवित हो उठे। उन्होंने जान लिया था कि जब भारत में वेद ज्ञान था तो भारत विश्वगुरु था। अतः उन्होंने गुरु विरजानन्द को गुरुदक्षिणा में अपना समस्त जीवन अर्पित करते हुए भारत में वेद, वैदिक धर्म एवं प्राचीन संस्कृति को पुनर्स्थापित करने का संकल्प लिया।

उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही, गौरक्षा, हिन्दी की रक्षा, संस्कृत भाषा की उपयोगिता, स्वदेश, स्वभाषा तथा स्वाभिमान जैसे विषयों पर लोगों के मन में जागृति उत्पन्न की।

अपने इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वर्ष 1875 में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। भारत को पुनः विश्वगुरु के पद पर आसीन करने के उद्देश्य से उन्होंने वेदों के वास्तविक भाष्य को देशवासियों के समक्ष प्रस्तुत किया और बिना किसी भेदभाव के सभी को वेद पढ़ने का अधिकार देने और वेदानुकूल आचरण करने की बात कही।

उन्होंने अपने छोटे किन्तु अहम जीवन काल में धार्मिक अंधविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों आदि पर जमकर प्रहार किया। वेद के सन्देश 'माता निर्माता भवति' का प्रचार–प्रसार करते हुए उन्होंने नारीशिक्षा की जोरदार वकालत की और ऊंच–नीच, छुआ–छूत तथा भेद–भाव के कारण हिन्दू समाज से अलग–थलग हो चुके एक बहुत बड़े जनसमुदाय को समाज की मुख्य धारा में लाने, उनके जीवन स्तर को उठाने और उन्हें शिक्षित बनाने हेतु कार्य करने का अह्वान किया।

समाज के उत्थान के लिए कार्य करने, स्वदेशी अपनाने और राष्ट्रभक्ति के विचारों का प्रचार–प्रसार करने के कारण वह अंग्रेज सरकार की आंखों का काँटा बन गए। उनके विरुद्ध रचे गए अनेक षड्यंत्रों के परिणामस्वरूप वर्ष 1883 में 59 वर्ष की आयु में उन्हें जहर दे दिया गया और अन्ततः 30 अक्तूबर 1883 को दीपावली की संध्या को अजमेर में उनका निधन हो गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवनकाल में जो महान कार्य प्रारम्भ किए वे भारत को पुनः विश्वगुरु के पद पर स्थापित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप आज जातिवाद, छुआछूत, बालविवाह, बहुविवाह, सतीप्रथा, पशुबलि, नरबलि, पर्दाप्रथा, देवदासी जैसी कुप्रथाओं में कॉफी कमी आई है। वहीं अंतरजातीय विवाह, दलितोद्धार, विधवा पुनर्विवाह, सर्वशिक्षा अभियान, नारी सशक्तीकरण, महिलाओं के लिए शिक्षा का अधिकार, सबको वेद पढ़ने का अधिकार, गुरुकुल शिक्षा पद्धति से शिक्षा जैसे कार्य सरकार द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के विचार शाश्वत हैं और आज भी प्रासंगिक हैं। उनके जन्म के 200 वर्ष बाद भी उनका जीवन हमें नई दृष्टि और चेतना प्रदान करता है, उनके द्वारा रचित सत्यार्थ–प्रकाश हमें नित नई उर्जा और संकल्प सिद्धि की संजीवनी शक्ति प्रदान करता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के शुभारम्भ के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 12 फरवरी, 2023 को एक प्रतीक चिह्न का अनावरण किया गया। यह प्रतीक चिन्ह मानव के त्यागमयी जीवन, अखण्ड शान्ति, खुशहाल विश्व और एक अखण्ड भारत का परिचायक है। यह इस बात का भी प्रतीक है कि वेद ही मानव जाति के जीवन का आधार है।

डाक विभाग, ''महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती'' के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है और वैदिक ज्ञान के प्रकाश को जन–जन तक पहुँचाने वाले तथा मानवता को नई दिशा प्रदान करने वाले इस देशभक्त के जीवन और कार्यों को नमन करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	:	श्री सुरेश कुमार
विरूपण कैशे	:	श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ	:	प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	518300
Stamps Printed	:	518300
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।
© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00